9

18 वीं शताब्दी में नई राजनैतिक संरचनाएँ

प्रिया और राहुल कि निगाह अचानक अपने विद्यालय के प्रधानाध्यपक कक्ष में लगे 18वीं शताब्दी के भारतीय उपमहाद्वीप के मानचित्र पर गई। इसमें उन्हें भारत कई अलग–अलग स्वतंत्र राज्यों में विभक्त दिखा जिसका पता उन राज्यों के भिन्न–भिन्न नाम और क्षेत्र से हो रहा था। इस मानचित्र में मुग़लों का भी एक क्षेत्र दिख रहा था जिसके विषय में पिछले अध्याय में उन्होंने काफी कुछ पढ़ा था। मानचित्र में राजनीतिक स्थिति को देखकर उनके मन में इन नवीन राज्यों के उदय की परिस्थितियों के विषय में सहज ही कई सवाल उठने हुए जिसे उसने वर्ग में शिक्षक के समक्ष रखा

मानचित्र–1 अठारहवीं शताब्दी का भारतीय उपमहाद्वीप

यदि आप मानचित्र–1 को ध्यान पूर्वक देखेंगे तो आपको पता चलेगा कि अठारहवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अनेक स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ इस कारण मुग़लों के साम्राज्य की सीमा काफी छोटी हो गई। 1707 में औरंगजेब के मृत्यु के बाद मुगलों के अनेक प्रदेश स्वतंत्र हो गए। मुगलों का विरोध करने वाली शक्तियों ने भी स्वतंत्र राज्य बना लिया। इस अध्याय में हम इसी शताब्दी के दौरान उदित हुई नई राजनीतिक शक्तियों के बारे में पढ़ेंगे।

अध्याय चार में आपने मुग़ल साम्राज्य के विषय में विस्तार से पढ़ा होगा। इस अध्याय में आप उन कारणों से परिचित हुए जिसने मुग़ल साम्राज्य को कमजोर किया। मुग़लों की इस कमजोरी का लाभ उनके अधीन कार्यरत प्रभावशाली शासकों ने उठाया। जैसे–जैसे मुग़ल साम्राज्य

Lok; r jkT ;%&
ऐसे राज्य
जो अपने सारे निर्णय
और नीतियों का
निर्धारण स्वयं
करता है।

www.absol.in

कमजोर होता गया क्षेत्रीय शक्तियाँ अपने को स्वतंत्र और स्वायत राज्य में परिवर्तित करने लगी। अतः अठारहवीं शताब्दी में नई राजनैतिक संरचना के उदय की परिस्थितियाँ प्रत्यक्षतः मुग़ल साम्राज्य के पतन के कारकों से जुड़ी थीं, जिसके विषय में आप पहले के अध्याय में पढ़े हैं।

उपमहाद्वीप में स्वतंत्र नए राज्यों का उदय– मुग़ल साम्राज्य के अवशेष पर उदित होने वाले राज्यों को स्वरूप के आधार पर तीन भागों या समूहों में बाँटा जा सकता है।

1. **मुग़ल प्रान्तों से स्वतंत्र होने वाले राज्य, बंगाल, अवध और हैदराबाद**
2. **बड़े मनसबदार और जागीरदारों का जो पहले भी मुग़लों के अधीन होकर काफी हद तक स्वायत थे का राज्य–राजपुताना क्षेत्र का राज्य**
3. **मुगलों से लंबे सैन्य संघर्ष के बाद उदित राज्य–मराठा, सिक्ख, जाट, एवं बुंदेल,**

© BSTBPC NOT TO BE REPUBLISHED

अठारहवीं शताब्दी में जिन नए राज्यों का उदय हुआ, उनमें सबसे प्रमुख राज्य था बंगाल, अवध और हैदराबाद (निजाम) इन राज्यों के संस्थापक व्यक्तियों का मुग़ल दरबार में काफी प्रभावशाली और ऊँचा स्थान था। इसी का लाभ उठाकर उन्होंने स्वायत राज्यों की स्थापना की।

नए राज्यों को तीन समूहों में विभाजित करने का आधार क्या रहा होगा।

मुग़लों की केन्द्रीय सत्ता की कमजोरी का लाभ उठाकर दो व्यक्तियों मुर्शिद कुली ख़ाँ और अली वर्दी खाँ ने बंगाल को धीरे–धीरे एक स्वतंत्र राज्य में परिवर्तित कर दिया। मुर्शिद कुली ख़ाँ को 1700 ई0 में जब बंगाल का प्रांतपति बनाया गया तभी उसने प्रान्त की सम्पूर्ण शक्ति अपने हाथ में केन्द्रित करना आरंभ कर दिया। बंगाल में अपनी सत्ता मजबूत करने के लिए सबसे पहले उसने आय के स्रोत, भूराजस्व प्रशासन पर नियंत्रण स्थापित किया। प्रशासन के खर्च को कम किया। जागीर भूमि (जमींदारों की जमीन) को राज्य की भूमि बना दिया। भूराजस्व वसूल करने में इजारेदारी या ठेकेदारी व्यवस्था को लागू किया। गरीब खेतिहरों का कष्ट दूर करने तथा उन्हें समय पर भू–राजस्व देने में समर्थ बनाने के लिए 'तकावी ऋृण' भी दिए। राजस्व वसूली की ठेकेदारी व्यवस्था ने किसानों के

तकावी ऋणः– किसानों को राज्य द्वारा दिया जाने वाला ऋण इसका उद्देश्य पैदावार को बढ़ाना था।

उपर आर्थिक बोझ बढ़ा दिया। इस राज्य में प्रशासन का स्वरूप मुग़लों के समान ही रहा तथा धार्मिक मामलों में भी उन्हीं की नीतियों को अपनाया। हिन्दुओं और मुस्लमानों को रोजगार और प्रशासन में समान अवसर दिया। इस प्रकार आंरभिक शासकों ने बंगाल को स्थिरता प्रदान की।

ठेकेदारी या इजारेदारी—राजस्व वसूली के लिए एक निश्चित क्षेत्र पर निर्धारित रकम के लिए कुछ लोगों से शासक द्वारा किया गया समझौता।

हैदराबाद— मुग़लों के अधीन अवध और हैदराबाद दो प्रमुख प्रान्त थे जहाँ बुरहान–उल–मुल्क एवं निजाम–उल–मुल्क आसफजहा ने क्रमशः स्वतंत्र राज्यों की स्थापना की। इन दोनों राज्यों के संस्थापकों का मुग़ल दरबार में काफी प्रभाव था लेकिन दरबार के षड़यंत्रों से तंग आकर इन्होंने अपने–अपने प्रान्तों को स्वायत शासन में परिवर्तित किया। दोनों राज्यों के शासकों ने अपने शासन को स्थिरता प्रदान करने के लिए आय के स्रोत भूराजस्व प्रशासन को व्यवस्थित करने पर सबसे अधिक ध्यान दिया। बंगाल की ही तर्ज पर भूराजस्व वसूली में ठेकेदारी प्रथा को अपनाया। वस्तुतः मुगलों से अलग होकर बनने वाले स्वायत राज्यों ने लगभग उन्ही की व्यवस्था को अपनाया। ये सभी राज्य अपने क्षेत्रों में एक या दो आरंभिक शासकों के समय में ही व्यवस्थित रह सके उसके बाद इन राज्यों को उन्ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ा जो बाद के मुगल शासकों ने की थी। अतः एक दो उदाहरण को छोड़, जैसे अवध के शासकों द्वारा लखनऊ में किया गया स्थापत्य कला का विकास, मुगल प्रान्तों से निर्मित राज्यों की कोई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ नहीं रहीं। ये राज्य एक तरह से अपने संस्थापकों की राजनैतिक महत्वकांक्षा की उपज थे। यह आकांक्षा मुगलों की कमजोरी से पैदा हुई थी।

बुरहान–उल–मुल्क

अलीवर्दी खाँ का दरबार

© RESERVED WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

राजपूत राज्य– पिछली इकाई में आपने राजपूतों के विषय में पढ़ा होगा। एक शक्तिशाली सामाजिक और राजनैतिक वर्ग के रूप में इनका उदय पूर्वमध्य काल में हुआ था। अध्याय चार में मुगलों और विभिन्न राजपूत राजवंशों के बीच सम्बन्ध के विषय में आप पढ़े होंगे। अकबर ने इस शक्तिशाली वर्ग के साथ स्थाई मित्रता करके मुगल साम्राज्य को स्थिरता प्रदान की थी। औरंगजेब के परवर्ती मुगल शासकों के काल में यह सम्बन्ध टुटने लगी। मुगलों के लगातार कमजोर होते जाने और उसके अधीन के प्रान्तों का स्वतंत्र राज्य में बदलने की प्रवृति ने राजपूतों में भी स्वतंत्र राज्य स्थापित करने की लालसा पैदा की। प्रमुख राजपूत वंशों ने धीरे–धीरे अपने को मुगल सत्ता से मुक्त करना आरंभ किया साथ ही दिल्ली और आगरा के आस–पास के क्षेत्रों पर अपना प्रभाव भी बढ़ाने लगे। परन्तु इन राज्यों ने अपने यहाँ कोई नियंत्रित प्रंशासनिक व्यवस्था कायम नहीं की। पहले की तरह इन्होंने पुनः आपस में संघर्ष करना शुरू कर दिया। इस तरह ये अपने शक्ति और साधन को नष्ट करते रहे।

18वीं सदी का सबसे श्रेष्ठ राजपूत शासक आमेर (जयपुर) का सवाई जयसिंह (1681–1743) था। वह एक विख्यात खगोलशास्त्री था। इस क्षेत्र में उसकी गणना बहुत हद तक सही थी। उसने जाटों से प्राप्त क्षेत्र पर जयपुर शहर की स्थपना की। उसने आगरा, दिल्ली, जयपुर, मथुरा और उज्जैन में पर्यवेक्षणशालाएँ बनवाई। यूनानी रेखागणितज्ञ यूक्लिड की पुस्तक "रेखागणित के तत्व" का सस्कृत में अनुवाद भी किया।

मुगलों से संघर्ष के बाद उदित होने वाले राज्य– अठारहवीं सदी में कुछ ऐसे राज्यों का अस्तित्व भी हम देखते हैं जो मुगलों से लगातार संघर्ष के बाद उदित हुऐ थे इनमें सबसे प्रमुख में मराठा राज्य सिक्ख और जाटों के राज्य थे।

मराठा राज्य– भारत में सत्रहवीं सदी में एक शक्तिशाली मराठा आंदोलन या विद्रोह शुरू हुआ जो अठारहवीं सदी की पहली चौथाई तक भारत की सबसे शक्तिशाली राजनैतिक इकाई बनकर उभरी। मराठों का उदय इस सदी की महत्वपूर्ण राजनैतिक–सामाजिक घटना थी जिसका नेतृत्व भारतीय इतिहास के एक रोमांचक व्यक्तित्व शिवाजी (1627–1680) ने किया। मुगल सम्राट औरंगजेब के साथ शिवाजी का संघर्ष मराठवाड़ा क्षेत्र के लोगों की राजनैतिक आकांक्षा का प्रतीक थी। यह मुगलों के विरुद्ध लोकप्रियता पर आधारित था। मुगलों के विरुद्ध जनता की भावनाओं का

© BSEBSRC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

प्रतिनिधित्व शिवाजी कर रहे थे। दक्कन में मराठे एक प्रभावशाली भू–स्वामी या वतनदार सामाजिक वर्ग था। ये अहमदनगर और बीजापुर के राज्यों में सैनिक सेवा तथा प्रशासन में शामिल थे। आरंभ में मराठों के प्रभाव को देखकर मुगलों ने भी उनसे सर्मथन प्राप्त करने की कोशिश की, लेकिन शिवाजी के पिता शाहजी भोंसले ने मुगलों की सत्ता को दक्कन में चुनौती देकर अहमदनगर राज्य में अपना प्रभाव काफी बढ़ा लिया। आगे शाहजी, बीजापुर राज्य की सेवा में चला गया जहाँ उसने अपने लिए एक जागीर का निर्माण किया। पूणा और उसके आस–पास के क्षेत्र पर भी उसने अपना प्रभाव स्थापित किया। वस्तुतः मराठे दक्कन में अहमदनगर और बीजापुर राज्य के अधीन रहकर अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने के प्रति सचेत थे। शिवाजी ने उन्हें संगठित कर स्वतंत्र राज्य की आकांक्षा उनमें पैदा की। इस काम में उन्हें मराठों के बड़े जमींदारों, देशमुखों के विरोध का सबसे पहले सामना करना पड़ा, क्योंकि वे स्वतंत्र मराठा राज्य की जगह बीजापुर या अहमदनगर राज्य के जमींदार ही रहना चाह रहे थे। वे अपनी जागीर में काफी स्वायत्त थे। शिवाजी बिना उनके समर्थन के स्वतंत्र मराठा राज्य की स्थापना नहीं कर सकते थे।

शिवाजी का आरंभिक जीवन— शिवाजी का जन्म 1627 ई0 में शाहजी भोंसले के घर हुआ। शिवाजी का आरंभिक जीवन माता जीजाबाई और अभिभावक दादाजी कोंणदेव के संरक्षण में गुजरा वह अपनी छोटी जागीर को सैनिक शक्ति द्वारा बढ़ाना चाहता था। इसके तहत अठारह वर्ष की उम्र में ही पूणा के निकट रायगढ़, कोंकण तथा तोरण के किलों पर कब्जा करके अपनी राजनैतिक महत्वकांक्षा का परिचय दिया। उस समय दक्कन में मुगल बीजापुर राज्य पर अपना नियंत्रण बढ़ा रहे थे। शिवाजी ने इन दोनों राज्यों के बीच हो रही

शिवाजी

WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

इस लड़ाई का फायदा उठाया। उसने अपनी छापामार लड़ाई शैली द्वारा बीजापुर के क्षेत्रों पर लगातार आक्रमण कर अपने प्रभाव को बढ़ाया।

औरंगजेब जब बादशाह बना तो उसने दक्कन में शिवाजी की शक्ति को, जो काफी बढ़ चुकी थी, तोड़ने की कोशिश की। उसने शाईस्ता खाँ को शिवाजी के विरुद्ध सैनिक अभियान का आदेश दिया लेकिन इसमें उसे सफलता नहीं मिली। शिवाजी द्वारा शाईस्ता खाँ के खेमे पर किये गए अचानक हमले में वह बाल–बाल बचा। इसके बाद औरंगजेब ने आमेर के शासक जयसिंह के नेतृत्व में एक बड़ा सैनिक अभियान शिवाजी के विरुद्ध किया। इसमें वह सफल रहा। शिवाजी ने अपने द्वारा जीते गए अधिकांश किले मुगलों को सौंप दिया, तथा मुगल मनसबदार बनने के लिए भी तैयार हो गया। परन्तु मुगल दरबार में औरंगजेब के द्वारा उसके साथ सम्मानजनक व्यवहार नहीं किए जाने के कारण मुगलों के साथ इसका संबंध बिल्कुल खराब हो गया।

1670 से शिवाजी ने मुगल और बीजापुर के विरुद्ध निर्णायक संघर्ष शुरू किया और उसने अपने द्वारा पहले जीते गये सभी किले वापस प्राप्त किया तथा बीजापुर के कई क्षेत्रों पर भी कब्जा जमाया। दक्कन में मुगलों के व्यापारिक, नगर और बंदरगाह सुरत पर हमला कर बड़ी मात्रा में धन भी प्राप्त किया। चूँकि मुगल इस समय उत्तर–पश्चिम भारत में अफगान विद्रोहियों से उलझे थे इसलिए दक्कन में हो रहे इन घटनाओं पर ध्यान नहीं दे पाए। शिवाजी ने इन सैनिक प्रयासों से प्राप्त क्षेत्र का अपने आप को स्वतंत्र शासक घोषित किया। उसने रायगढ़ के किले में एक स्वतंत्र राजा के रूप में विधिवत राज्याभिषेक करवाया। इस तरह वह एक जागीरदार से स्वतंत्र शासक के रूप में दक्कन में अपने को स्थापित किया।

शिवाजी के राज्याभिषेक का महत्व और उसे प्राप्त जनसमर्थन– शिवाजी ने अपने को स्वतंत्र शासक घोषित कर एक ही साथ कई राजनैतिक और सामाजिक उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया। अब उसका परिवार सम्पूर्ण मराठा क्षेत्र में सबसे प्रतिष्ठित हो गया। इस आधार पर उसने परम्परागत खानदानी मराठा परिवारों में शादी की। इससे उसके राजनैतिक शक्ति में वृद्धि हुई। अब वह एक विद्रोही से राजा की हैसियत में आकर दक्कन के सुल्तानों के समक्ष अपने को खड़ा किया।

WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

शिवाजी को कोली, कुनवी एवं अन्य निम्न सामाजिक समुदायों का समर्थन बड़े पैमाने पर प्राप्त हुआ था। उस समुदाय ने समाज में अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने एवं भूमि पर अपने अधिकार को स्थाई बनाने के उद्देश्य से शिवाजी का समर्थन किया। उस क्षेत्र के अन्य लोगों का समर्थन भी उसे इसलिए मिला क्योंकि मुगलों को वे लोग बाहरी समझते थे। उन्हें राजा मानने के लिए तैयार नहीं थे, तथा किसी प्रकार के कर को देने के लिए भी तैयार नहीं थे। मुगलों द्वारा बीजापुर और अहमदनगर राज्यों के साथ अपनाई गई अपमानजनक नीति से भी वे मुगलों का विरोध कर रहे थे। इस स्थिति में शिवाजी ने जब मुगल शासन का विरोध करना आंरभ किया तो स्वाभाविक ढंग से लोगों का समर्थन उन्हें बड़े पैमाने पर मिला। मराठों में कृषक समुदाय (कोली,कुनवी) एवं दलित वर्ग को एक साथ मजबूत सामाजिक गठबंधन में परिवर्तित करने का प्रयास भी शिवाजी ने किया। इसलिए यह कहा जाता है कि उसका राज्य दक्कन में मुगल विरोध की जनआकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व कर रहा था। उसका राज्य जनभावनाओं और लोकप्रियता पर आधारित था।

शिवाजी की प्रशासनिक व्यवस्था– शिवाजी ने अपने राज्य में जो व्यवस्था अपनाई वह उस क्षेत्र के राज्यों के अनुरूप ही थी। उसके प्रशासन का केन्द्र राजा था। उसको सहयोग देने के लिए आठ मंत्रियों का एक समूह था। इन्हें अष्टप्रधान कहते हैं।

1) **पेशवा–** प्रधानमंत्री प्रशासन और अर्थविभाग का प्रमुख–राजा के बाद सबसे शक्तिशाली अधिकारी जो लोकहित को ध्यान में रखता था।

2) **सर–ए–नौबत–** सेनापति–सेना की नियुक्ति, घोड़ा और अन्य सैनिक साजो समान की देखरेख करना।

3) **मजुमदार–** लेखाकार–इसका काम राज्य के आय–व्यय से जुड़े मामलों का लेखा तैया करना।

© RSTBBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

4) **वाके नवीस–** गृह एवं गुप्तचर विभाग–राज्य के विरुद्ध होने वाली सभी गतिविधियों का ये विवरण रखता था।

5) **सुरू नवीस–** राजा को पत्र व्यवहार में मदद करने वाला–राजा अपने अधिकारियों के साथ संपर्क इसके माध्यम से रखता था।

6) **दबीर–** विदेश मामलों का प्रभारी–पड़ोसी राज्यों से संबंध बनाने में राजा को सलाह देता था।

7) **पंडित राव–** धार्मिक मामलों का प्रभारी–विद्वान एवं अन्य धार्मिक कामों के लिए मिलने वाला अनुदान का यह विवरण रखता था।

8) **न्यायाधीष शास्त्री–** हिन्दु न्याय प्रणाली की व्याख्या करने वाला

शिवाजी ने भूराजस्व में प्रमुख नीतियों को अपनाया और जमीन का नए ढंग से सर्वेक्षण कराया तथा करों का निर्धारण उसी के अनुरूप किया। वंशानुगत जमींदारों को नियंत्रित किया ताकि आय का स्रोत बना रहे। उसने अपने क्षेत्र के बाहर पड़ोसी राजाओं पर चौथ और सरदेशमुखी नामक दो भूराजस्व कर लगाए। उसके द्वारा बड़े जमींदारों या देशमुखों की शक्ति को तोड़ने की कोशिश अपने राजस्व प्रशासन में किया। इससे उसके अधिकार क्षेत्र में काश्तकारी जमीन का विस्तार हुआ। इस नीति से छोटे और मंझोले किसान तथा जमीन मालिकों का उन्हें समर्थन मिला। उसने सैन्य प्रशासन को व्यवस्थित किया। उसे नकद वेतन का प्रावधान हुआ। इस प्रकार शिवाजी ने अपने राज्य क्षेत्र में जो प्रयास किया उसका समर्थन छोटे लोगों ने व्यापक ढंग से किया।

> चौथ– मराठों द्वारा पड़ोसी राज्य क्षेत्रों पर हमला नहीं किये जाने के बदले लिया गया कर जो उपज का 25 प्रतिशत था।

> सरदेशमुखी– मराठों के बड़े जमींदार परिवारों, सरदेशमुखों के द्वारा लोगों के हितों की रक्षा के बदले उनसे लिया गया कर यह उपज का 9 से 10 प्रतिशत होता था।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

पेशवाओं के अधीन मराठा शक्ति का विकास–

शिवाजी के मरने (1680 ई0) के बाद औरंगजेब जब तक जीवित रहा मराठा क्षेत्र पर

मुगलों का प्रभाव बना रहा। परन्तु 1707 के बाद शिवाजी के राज्य क्षेत्र पर चितपावन ब्राह्मणों के एक परिवार का प्रभाव स्थापित हुआ। शिवाजी के उत्तराधिकारियों द्वारा उसे पेशवा का पद प्रदान किया गया। उसने पुणा को मराठा राज्य का केन्द्र बनाया। पेशवाओं ने मराठों के नेतृत्व में सफल सैन्य, संगठन का विकास किया जिसके बल पर अपने राज्य का विस्तार बहुत अधिक क्षेत्रों तक कर लिया। मुगलों के कई परवर्ती शासक पेशवाओं के प्रभाव में ही कार्य करने को बाध्य हुए। पेशवा ने

सम्पूर्ण मराठे राज्य को पाँच परिवारों में अलग–अलग विभाजित कर शासन की जिम्मेवारी सौंप दी। इस विभाजन का आधार चौथ और सरदेशमुखी की कुशल वसूली थी। पूणा के आस–पास का इलाका पेशवाओं के अधीन, ग्वालियर का इलाका सिंधिया के पास, इंदौर का इलाका होल्कर के पास, विदर्भ का इलाका गायकवाड के पास, तो नागपुर का इलाका भोंसले के अधिकार में रखा गया। इन सबों का सैद्धान्तिक प्रमुख पेशवा होता था। इसे मिलाकर मराठा परिसंघ कहा जाता था। मराठों की इस व्यवस्था ने पेशवा के अधीन उसे भारत की सबसे शक्तिशाली राज्य बना दिया। परन्तु उत्तरपश्चिम भारत में अपनी राजनैतिक महात्वकांक्षा को पुरा करने के लिए अफगान सरदार अहमदशाह अबदाली के साथ 1761 ई॰ में होने वाली पानीपत की तीसरी लड़ाई में मराठे की हार के बाद उसकी शक्ति बहुत कमजोर हुई, इसने मराठों के उत्कर्ष पर विराम लगा दिया।

जाट राज्य– मराठों के समान ही जाट नामक एक कृषक सामाजिक समूह ने सत्रहवीं अठारहवीं शताब्दी में मुगलों से संघर्ष के बाद अपना स्वायत राज्य कायम किया जिसका केन्द्र पश्चिम राजस्थान था। औरंगजेब के विरुद्ध सबसे शक्तिशाली और प्रथम कृषक विद्रोह इन्ही लोगों का था। इस वर्ग में अधिकांश काश्तकार थे, कुछ ही जमींदार। इनके बीच भाईचारे और न्याय की मजबूत भावना के कारण आपस में

© RESERVED WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

जुड़ाव था। वैसे तो जाटों का विद्रोह जमींदारों के नेतृत्व में होने वाला कृषक विद्रोह था लेकिन इसी आधार पर 1680 तक इनका प्रभाव दिल्ली और आगरा के क्षेत्रों में स्थापित हुआ। इस प्रभाव का परिणाम था, भरतपुर में चूड़ामन और बदन सिंह के नेतृत्व में स्थापित जाट राज्य है। इसका पूर्ण विकास सूरजमल (1756–1763 ई0) के नेतृत्व में हुआ।

सिक्ख राज्य– पिछले अध्याय में आपने देखा होगा कि पन्द्रहवीं शताब्दी में सिक्ख धर्म को गुरु नानक ने स्थापित किया जो आरंभ में जाट किसानों और छोटी जातियों के बीच फैला। सत्रहवीं शताब्दी से सिक्ख एक राजनैतिक समुदाय के रूप में भी अपने–आप को संगठित करने लगे। अपने आखिरी गुरु, गुरु गोविन्द सिंह (1666-1708) के नेतृत्व में सिक्खों ने अपने को धार्मिक और राजनैतिक दोनों रूपों में संगठित करने का प्रयास किया। गुरु गोविन्द सिंह की मृत्यु के बाद गुरु की परम्परा खत्म हो गई। सिक्खों का नेतृत्व उनके विश्वासी शिष्य बंदा सिंह या बंदा बहादुर के हाथ में आया। उसने मुगलों के साथ आठ साल तक संघर्ष किया लेकिन राज्य निर्माण में वह सफल नहीं हो सका। नादिरशाह और अहमदशाह अब्दाली के आक्रमणों के कारण सिक्खों के प्रभाव वाले क्षेत्र पंजाब के प्रशासन में अव्यवस्था आई। अब्दाली के वापस लौटने पर सिक्खों ने पंजाब क्षेत्र मे राजनैतिक रिक्तता को भरना आरंभ किया। उन्होंने पहले अपने को जत्थों में फिर मिस्लों में संगठित किया। इस तरह के 12 मिस्ल या संघ थे जो पंजाब के विभिन्न भागों में प्रभावशाली थे। ये मिस्ल समानता के आधार पर एक दूसरे को सहयोग करते थे। इसी तरह के एक संघ के प्रमुख रणजीत सिंह के नेतृत्व में सिक्खों ने उन्नीसवीं शताब्दी में एक शक्तिशाली राज्य के रूप में अपने को परिवर्तित किया।

चित्र : गुरु गाविन्द सिंह

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

क्षेत्रीय राज्यों के उदय का परिणाम तथा राष्ट्रीयता की पृष्ठभूमि निर्माण में भूमिका :–

मुगल साम्राज्य के कमजोर होने के बाद अठारहवीं सदी में कई नए स्वतंत्र क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ। यह भारत में राजनैतिक और प्रशासनिक बिखराव का प्रतीक था। लोगों के समक्ष कई राज्य उभर कर सामने आ गये ये सभी आपस में अपने राज्य को बढ़ाने एवं दूसरों से शक्तिशाली बनाने के लिए आपस में लड़ते रहते थे। इन्होंने अपने राज्य का खर्च चलाने के लिए भू–राजस्व प्रशासन में ठेकेदारी प्रणाली शुरू की। चूँकि इनका राज्य क्षेत्र छोटा था। उससे आमदनी इनके खर्च के अनुरूप प्राप्त नहीं होती थी। इसलिए भू–राजस्व वसूली में इन्होंने इस विधि को अपनाया, जिसके परिणामस्वरूप किसानों का शोषण और अधिक बढ़ गया। राजनैतिक अशांति के इस वातावरण में व्यापार, वाणिजय, शिल्प एवं कृषि का विकास आशा अनुरूप नहीं रहा। इस समय का शासक वर्ग आपसी लड़ाई और ऐश–मौज के जीवन में अपना पैसा खर्च कर रहे थे। भारत और विश्व स्तर पर राजनैतिक परिवर्तनों से वे बेखबर थे। भारत में उस समय व्यापारी के रूप में मौजूद अंग्रेजों के वास्तविक उद्देश्यों को वे नहीं समझ सके।

राजनैतिक बिखराव के इस दौर में अंग्रेजों ने धीरे–धीरे अपने को एक राजनैतिक शक्ति के रूप में यहाँ स्थापित करना शुरू किया। क्षेत्रीय राज्यों की जनता और शासक की भावना केवल अपने क्षेत्र से जुड़ी थी, इसलिए अंग्रेजों की बढ़त को वे रोक न हीं सके। जब तक अंग्रेजों के वास्तविक उद्देश्य को वे जान पाते, उसने भारत को अपना गुलाम बना लिया। सभी क्षेत्रीय राज्य उसके अधीन हो गये। यहाँ से भारत में क्षेत्रीयता की भावना कमजोर होने लगी और कई स्तरों पर एक सामान्य दुश्मन (अंग्रेज) का विरोध होने लगा। 1857 का विद्रोह इस विरोध का एक एकीकृत रूप था। यद्यपि उसके कारण अलग थे फिर भी इसमें शामिल लोगों का एक सामान्य लक्ष्य था अंग्रेजी सरकार को खदेड़ना।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

आओ याद करें :–

(i) मुगलों के उत्तराधिकारी राज्य में कौन राज्य आता है।

(क) सिक्ख (ख) जाट

(ग) मराठा (घ) अवध

(ii) बंगाल में स्वायत राज्य की स्थापना किसने की

(क) मुर्शिद कुली खाँ (ख) शुजाउद्दीन

(ग) बुरहान–उल–मुल्क (घ) शुजाउद्दौला

(iii) सिक्खों के एक शक्तिशाली राजनैतिक और सैनिक शक्ति के रूप में किसने परिवर्तित किया–

(क) गुरुनानक (ख) गुरु तेगबहादुर

(ग) गुरु अर्जुनदेव (घ) गुरु गोविन्द सिंह

(iv) शिवाजी ने किस वर्ष स्वतंत्र राज्य की स्थापना की

(क) 1665 (ख) 1680

(ग) 1674 (घ) 1660

(v) मराठा परिसंघ का प्रमुख कौन था ?

(क) पेशवा (ख) भोंसले

(ग) सिंधिया (घ) गायकवाड

निम्नलिखित में मेल बैठाएँ :–

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

(i)	ठेकेदारी प्रथा	–	मराठा
(ii)	सरदेशमुखी	–	औरंगजेब का निधन
(iii)	निजाम–उल–मुल्क	–	जाट
(iv)	सूरजमल	–	हैदराबाद
(v)	1707 ई॰	–	भू राजस्व प्रशासन

आइए विचार करें :–

(i) अवध और बंगाल के नवाबों ने जागीरदारी प्रथा को हटाने की कोशिश क्यों नहीं किया?

(ii) शिवाजी ने कैसी प्रशासनिक व्यवस्था अपने राज्य में कायम की?

(iii) पेशवाओं के नेतृत्व में मराठा राज्य का विस्तार क्यों हुआ?

(iv) मुगल सत्ता के कमजोर होने का क्या प्रभाव भारतीय इतिहास पर हुआ?

(v) अठारहवीं शताब्दी में उदित होने वाले राज्यों के बीच क्या समानताएँ थीं?

आइए करके देखें :–

(i) शिवाजी और औरंगजेब के संबंधों में शिवाजी के विषय में प्रचलित कथाओं की चर्चा वर्ग में अपने साथियों से करें।

अथवा

शिवाजी के विषय में आम लोगों के बीच कैसी कथा प्रचलित है।

(ii) गुरु गाविन्द सिंह की मृत्यु से जुड़ी कथा का पता लगाओ–

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED